19. YÜZYILDA URDUCA VE HİNTÇE ROMANLARDA HİNDİSTAN TOPLUMU

Mohammad RASHID*

Öz: 1857 Bağımsızlık Savaşı. Yarımada tarihinin en önemli olaylarından biridir. Gerek tarihçiler gerekse yazarlar, bu savaşı farklı bakış açılarıyla ele almışlardır. Savaş sonrası Hint halkı bazı koşulları yerine getiremeyince bir kısım Hindistanlı Urdu yazarları öne çıkarak Hint halkına umut vermeyi görev edinmişlerdir.

Hint halkı için umut ışığı olan bazı Hint-Urdu yazar ve tarihçilerinin başlıcaları şunlardır: Sir Syed Ahmad Khan, Shahwaliullah, Nazeer Ahamad, Ratannath Sharesar, Abdul Halim Sharar, Raja Mohan Ray, Shiridha Ram Fulauri, Radha Krishn, Balkirish Bath vb.

Anahtar Kelimeler: Hindistan, 1857 Bağımsızlık Savaşı, Roman, Tarih, Dil-Toplum.

INDIAN SOCIETY IN 19TH CENTURY'S URDU-HINDI NOVELS

Abstract: The War of Independence in 1857 was one of the most significant events of the history of India. Both historians and writers have examined this war in different perspectives. After the war, Indians could not be able to understand how we come out from these situations. In this situation, some of the Hindi-Urdu fiction writers came out and took responsibility to give a hope for Indian peoples.

Here is the name of some Urdu-Hindi fiction writers and intellectuals those who is did great job for India and Indian peoples Sir Syed Ahmad Khan, Shahwaliullah, Nazeer Ahamad, Ratannath Sharesar, Abdul Halim Sharar, Raja Mohan Ray, Shiridha Ram Fulauri, Radha Krishn, Balkirish Bath etc.

Keywords: Indian, 1857, Fiction, History, Language, Social Environment.

* Okt. Dr., İstanbul Üniversitesi Edebiyat Fakültesi, Doğu Dilleri ve Edebiyatları Bölümü, Urdu Dili ve Edebiyatı Anabilim Dalı (rashujnu@gmail.com).

19 वी ंसदी के उर्दू-हिंदी उपन्यासों में भारतीय समाज

सारांश: स्वतंत्रता संग्राम 1857 युद्ध भारत के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाएं थीं। इतिहासकारों और कथालेखकों ने इस युद्ध का विभिन्न दृष्टिकोणों से निष्कर्ष निकाला है।.

युद्ध के बाद, भारतीय इन स्थितियों को समझने में सक्षम नहीं हो पा रहे थे। इस स्थिति में, कुछ हिंदी-उर्दू कथा लेखकों ने सामने आकर भारतीय लोगों के लिए आशा देने के लिए जिम्मेदारी ली।.

यहां कुछ उर्दू-हिंदी कथालेखकों और बुद्धिजीवियों का नाम है, जिन्होंने भारत और भारतीय लोगों के लिए बहुत अच्छा काम किया है। सर सैयद अहमद खान, शाहवालीउल्लाह, नजीर अहमद, रत्नानाथ श्रसार, अब्दुल हलीम शरर, राजा मोहन राय, शिरीधा राम फुलाऊरी, राधा कृष्ण, बाल कृष्श भट्ट आदि।.

विषयवस्तु : भारतीय, 1857, उपन्यास, इतिहास, भाषा, सामाजिक

तावना्रस्प

उन्नीसवी ंसदी में भारत में विभिन्न स्तरों पर परिवर्तन का युग रहा है। बल्कि हम यह कह सकते हैं कि परिवर्तन का यह रूप शायद ही किसी समय में देखने को मिला हो। जहाँ इन परिवर्तनों से हमारे देश की राजनीतिक स्थिति प्रभावित हुई , वहीँ हमारा साहित्य भी प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सका। यहां के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति ग़रज़ कि समाज का कोई भी विभाग इसके प्रभाव से सुरक्षित नहीं रहा । जहां एक ओर पुरानी सांस्कृतिक मूल्य दम तोड़ रही थीं वहीं नए मूल्यों की नई संस्कृतियां अपना प्रभाव दिखाने के लिए बेताब थीं। जहां कुछ लोग पुराने मूल्यों को दिल से लगाए बैठे थे और उसे सुरक्षित रखने के लिए जी-जान से कोशिश कर रहे थे वहीं कुछ लोग नई सभ्यता और नए समाज के गठन के लिए नए-नए तरीके अपनाने का प्रयास कर रहे थे।

सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर जितना भी परिवर्तन इस सदी में घटित हुआ इसमें सबसे अहम भूमिका यहां के राजनीतिक परिस्थितियों का रहा है। यहां के राजनीतिक हालात जिस तरह बदलते रहे थे उस तरह से हमारा समाज भी प्रभावित होता रहा था। और जब हमारा समाज प्रभावित हुआ तो हमारी सभ्यता और हमारे आर्थिक हालात कैसे प्रभावित न हो सकते थे।

अंग्रेज भारत में पूरी तरह से काबिज हो गए। राजनीतिक प्रतिरोध करीब करीब खत्म हो चुका था। हर जगह अंग्रेज अपने मन मुताबिक सरकार चला रहे थे। जो भी कानून लागू हो रहे थे वह अंग्रेजों के अपने बनाए हुए थे जिस तरह चाहते थे उस तरह का कानून लागु करते थे जो कि समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते थे। यह लोग यहां के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक ग़रज़ कि सभी क्षेत्रों पर काबिज हो गए थे। जिसके कुछ अच्छे परिणाम और कुछ बुरे परिणाम जनता के सामने आ रहे थे। जहां एक ओर Development काम हो रहा था वही दूसरी ओर यहां की जनता को कठोर अत्याचार का सामना करना पड़ रहा था। भारतीय जनता

को वह सब काम करने पड़ते थे जो उनसे अंग्रेज कराना चाहते थे।

जाहिर है कि ऐसे बदतर हालात को जनता कब तक सहन करती। परिणाम यह हुआ कि भारत के कोने कोने से विद्रोह का सरबुलन्द होने लगा जिसमें बंगाल और पूर्वी भारत सबसे आगे थे। इन विद्रोहो में उड़ीसा के जमींदारों का विद्रोह, असम का विद्रोह वा विजय नगर के राजा का विद्रोह आदि उल्लेखनीय है जो कि अंग्रेजों के होश उड़ाने के लिए काफी था। एक बार फिर भारत की जनता एकत्रित हो रही थी। लोगों में एक नया उत्साह एक नई आशा और एक चमक आ गई थी। इस युद्ध ने प्राचीन और आधुनिक युग की एक दीवार खड़ी कर दी और यहां से एक नए सामाजिक-राजनीतिक युग की शुरूआत हो गयी थी। डॉक्टर खालिक अहमद निजामी लिखते हैं कि:

> '' 1857 की राजनीति और सांस्कृति भारतीय इतिहास में एक मील के पत्थर की हैसियत रखता प्राचीन और आधुनिक के बीच में यह वह मंजिल है जहां अतीत के छाप पढ़े जा सकते हैं और भविष्य की संभावनाओं का आकलन भी किया जा सकता है। '' [1]

उन्नीसवीं सदी का भारत राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का सामना कर रहा था। जहां राजनीति में मुगल साम्राज्य के विभिन्न प्रांतों के राजा एक एक करके अपने राज्य अंग्रेजों के हाथों में दे रहे थे वहीं इसके बुरे परिणाम भी लोगों के सामने आ रहे थे। इसका असर यहां के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों पर पड़ता हुआ दिखाई दे रहा था। पुराना समाज मिट रहा था। उसकी जगह एक नया समाज बन रहा था। भारत की आर्थिक स्थिति भी दिन प्रतिदिन खस्ता हो रही थी। जो एक नई सभ्यता को जन्म दे रही थी।

यहां के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनो से साधारण भारतीय अज्ञात थे। राजनीति के नाम पर गृहयुद्ध और आपसी लड़ाई के अलावा उनके पास कुछ भी नहीं था। कुछ सरकार ने तो, कुछ प्रकृति ने अकाल की स्थिति में जो ज़ुल्म ढाए उसने आम इंसानों की स्थिति को और खराब कर दिया। यही वजह थी कि मुट्ठी भर अनाज के लिए ब्रिटिश सरकार के भरे हुए गोदामों के सामने हजारों भारतीयों ने दम तोड़ दिया। ऐसे विपरीत परिस्थितियों को देखते हुए कुछ बाहरी वाणिज्यिक कंपनियां अपने उद्देश्यों पूरा करने के लिए भारत आईं और यहां की राजनीति में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। इसमें ईस्ट इंडिया कंपनी ने सभी पर बढत हासिल कर लिया जिसके के बाद देश का शासन अंग्रेजों के हाथों में चला गया। राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्तर पर एक बहुत बड़ा परिवर्तन आ रहा था जिससे यहां के लोगों में अराजकता मच गई और यहाँ उनकी अपनी व्यवस्था दरहम बरहम हो गयी। अर्थव्यवस्था के तौर-तरीके बदल गए, उद्योग और कला बाज़ार में क्रांति पैदा हो गए। उस पर अत्याचार है कि यहां के कारीगरों से बाहरी देशों के व्यापारी कम कीमत पर अपने माल खरीदने लगे, जो बाजार में महंगे दामों पर बेचने लगे। और अपने साथ लाई हुई मशीनों से घरेलू कारीगरों को करीब करीब निष्क्रिय बना दिया जिससे लोगों को विवश होकर उनके यहां नौकरी करनी पड़ रही थी। लेकिन यहां भी उन्हें शांति नहीं मिली क्योंकि कंपनी इन लोगों से काम अधिक कराती थी बदले में वेतन बहुत कम देती थी जिससे उन गुजारा बहुत कठिनाई

से होता था जो गरीब थे वह और गरीब होते गए जिसकी वजह से ग्रामीण जीवन और कृषि में दिन प्रति दिन रोज नए-नए समस्याएं पैदा होने लगी और किसानों को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था, ब्रिटिश सरकार उनसे असहनीय हद तक कर वसूल करती थी और अवैध भुगतान पर मजबूर करती थी और उन पर तरह तरह के ज़ुल्म ढाती थी, यहां जमींदारी की जगह सरकार ने ले ली थी। कथनानुसार बिपिन चंद्रा:

> '' अंग्रेजों ने भारत के ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। लेकिन इन परिवर्तनों का उद्देश्य यह नहीं था कि भारतीय उत्पादकों के तरीके को अच्छा बनाया जाए ताकि उत्पादन में वृद्धि हो, किसानों की हालत संभले, उनका उद्देश्य तो केवल इतना था कि खेती की सभी बचत, मालगज़ारी की सूरत में प्राप्त कर ली जाए। ' '[2]

उन्नीसवीं सदी में हमारे उपन्यासकारों पत्रकारों ने समाज सुधार पर ज्यादा जोर दिया है। उन्होंने अपनी किताब के जरिए समाज सुधार की बात की है उन्होंने अपने उपन्यासों में उसी विषय को जगह दी है जो सामान्य जीवन और रोजमर्रा के हैं और चरित्र भी ऐसे हैं कि पढ़ने के बाद हर किसी को अपनी और अपने घर की कहानी मालूम हो। इस युग का सबसे बड़ा संकट उनकी वित्तीय स्थिति थी, जनता को कोई उपाय ही समझ में नहीं आ रहा था उससे कैसे निकले क्योंकि जमीन तो उनसे छिन गई थी, उस पर से लगान और फिर मनमानी कीमत पर किसानों की फसलों की बोली, इस सदी में किसानों की इसी शैली के हालात थे। एक अंश:

> '' पिता के मरने के बाद घर के प्रबंधन का कुल बार उनके सिर पर आ पड़ा। मगर खर्चों से किस कदर संतोष था इसीलिए कि नवाब की सरकार से सात रुपया माहवार उनकी माँ को मिलता रहा। मगर दुर्भाग्यवश पूरा साल गुजर न पाया था कि नवाब करबलाए मुअल्ला चले गए और वहां जाकर दो ही महीने बाद निधन हो गया। अब यह इंटर क्लास में थे जब बाहर की आय बिल्कुल समाप्त हो गई तो रोजमर्रा के खर्चों के लिए घर संपत्ति बिकने लगी। यहां तक कि सोने चांदनी का सामान बिक गया तांबे के बर्तनों की नौबत आई, वह भी एक एक करके बिक गए। यहां तक कि सिवाय दो तीन पतीलइयों और दो लोटों के कुछ बाकी नहीं रहा। यह अब तक स्कूल में पढ़ने जाते थे और सभी आशाऐं परीक्षा के पास होने पर निर्भर थीं। यहां तक कि परीक्षा का समय करीब आया। हेडमास्टर ने फीस मांगी तो पत्नी की चूड़ियाँ गिरवी रखकर दस रुपये फीस

जमा किए। परीक्षा के दो दिन बाकी थे कि मां
हैजा से पीड़ित हुईं और ठीक उसी दिन मर गया
जिस दिन उन्हें परीक्षा में भाग लेना था।'' [3]

एक तरफ तो ऐसे हालात थे तो दूसरी तरफ लोग एक-दूसरे को नीचा दिखाया के लिए उत्सुक दिखे। यहां तक कि एक दूसरे के खिलाफ षड्यंत्र को वैध मानते थे। कुछ लोग मुकदमेबाजी में एक दूसरे के खिलाफ साजिश में विशेषज्ञता रखते थे, ऐसे लोग समाज को खराब करने की पूरी कोशिश करते थे। क्योंकि यह पीड़ित को ही निशाना साधते थे।

इस समय के लोगों का धर्म पर विश्वास बहुत था। इसलिए धार्मिक व्यक्ति को बहुत महत्व देते थे। जिसकी वजह से कुछ स्वार्थी लोग उन्हें बेवकूफ बनाते थे। और जब कोई जागरूक व्यक्ति ऐसे लोगों की पहचान कराता था और उनसे लड़ने और मरने मारने तक उतर जाते थे। धर्म को वह असाधारण हद तक महत्व देते थे। जिसकी वजह से वह अक्सर कठिनाइयों का सामना करते थे, पेश है एक अंश।

'' खलीफा: वह तुम क्या जानो। हां, ऐसा ही मालूम हुआ होगा। शाह साहब कभी गलत नहीं कहेंगे।

खुर्शीद: यह कौन शाह साहब उल्लू के पट्ठे हैं।

खलीफा: ले बीस बीस। ज़बान संभाल के बातें करो। और जो जी चाहे करो.मज़ाक करो। शाह साहब के विषय में कुछ नहीं कहना।

नवाब: (गुस्सा गए)। यह क्या बेहूदगी है। एक सज्जन आदमी को व्यर्थ गालियां देना खुर्शीद ये बातें तुम्हारी हमे पसंद नहीं।

खुर्शीद : बहुत से ऐसे मिला सियाने देखे हैं। सिवाय धोखे और कोई बात नहीं।

खलीफा: सच है जैसा आदमी जैसा होता है उसे सब वैसे मालूम होते हैं। '' [4]

जब गदर को आन्दोलन हो रहे थे तो जहां अंग्रेज शासक एक ओर भारतीयों पर हिंसा कर रहे थे तो कुछ ऐसे अंग्रेज शासक भी थे जो वास्तव में सहानुभूति रखते थे। वह जहां अंग्रेजों के इस कदम को भी गलत मानते थे वही भारतीयों द्वारा किए जा रहे अंग्रेजों की हत्या व लूटपाट भी सही मानते थे। उनका उद्देश्य केवल और केवल राष्ट्र की भलाई का होता था। नजीर अहमद ने इबनउल वकत द्वारा यह दिखाने की कोशिश की है।

'' देखो, अत्याचारियों क्या बेजा हरकत की है। मालूम होता है कि शहर में बड़ी कठोर विपदा आने वाली है। खून अकारण कभी खाली जाए नहीं सुना। भगवान जाने शाहजहां ने कैसे मनहूस इतिहास में इस कम्बख्त शहर की नींव डाली थी कि शांति की कोई पूरी सदी इस बस्ती में ना गुजरी। मगर इस बार कुछ ऐसा समां नज़र आता है कि लोग नादिर शाह की घटना को भी भूल जाएंगे। ''[5]

सांस्कृतिक स्तर पर सबसे अधिक संघर्ष इस दौर में देखने को मिलता है। रहन-सहन, पहनावा, आदतों, सलीके, विचारों, आदि जहां अंग्रेजी शासक भारत में अपनी सरकार जमाने के लिए चाहते थे कि कैसे भारतीयों पर अपनी सभ्यता की छाप छोड़ी जाए वहीं भारतीय इसे सख्त नापसंद करते थे। वह दिन रात अपनी सभ्यता को बचाने के लिए चिंतित नजर आते हैं।

लेकिन इसमें कुछ ऐसे भी जो इस सभ्यता में पूरी तरह से रंगना चाहते थे और कुछ तबका ऐसा था कि जो उनकी अच्छाइयों को ही केवल अपने जीवन में लाना चाहते थे। जाहिर है कि जहां इस तरह के हालात होंगे वहां संघर्ष जरूर होगा.नज़ीरअहमद अपने उपन्यास इबनोलवकत इस समय में इबनोलवकत और नोबेल नोबेल महोदय कहला हुए कहते हैं कि:

> कम से कम इस कदर कि अंग्रेजी विधि के अनुसार एक मकान हो। आप देखते हैं कि वे हमेशा विदेशी शहरी खुले हुए मकानों में रहना पसंद करते हैं और हम लोगों का तरीका और शैली भी अलग है। मेरे दोस्त तुम से मिलने के लिए कहते रहते हैं कई बार मन में आया कि आप के पास ले चलूँ। फिर सोचा कि आप उन लोगों से मिलने के लिए तैयार नहीं हैं। अकारण लज्जा होगी। एक तो अपने मकान ऐसी गलियों में स्थित है कि वहां तक कभी जानहीं सकते। फिर गलियां तंग और गंदी कि कोई साहब लोग जाना पसंद नहीं कर सकता। आपका मकान यद्यपि बुरा नहीं है, लेकिन साहब लोगों आसाइश के लिए मेज कुर्सी, आदि कोई सामान नहीं। इस कारण से मैं अपने कसी दोस्त अपके पास ले जाने की हिम्मत नहीं की। तो इस बारे में जैसी आप की अभिलाषा हो बयान कीजिए कि आप अंग्रेजों के साथ जिस तरह से है कि मैं चाहता हूँ मिलना पसंद है या नहीं? [5]

उर्दू साहित्य की तरह हिंदी साहित्य में भी उन्नीसवीं सदी बहुत महत्व रखता है। अगर हम साहित्य के संदर्भ में बात करें या फिर भाषा के दृष्टिकोण से देखें तो इस बात में बहुत सच्चाई नजर आएगी। भाषा के आधार पर इसमें भारी बदलाव देखने को मिलता है। अगर हम साहित्य के संदर्भ में देखें तो पहली बार उसे जनता से जुड़ता हुआ पाते हैं। इससे जुड़े सारे विषयों जैसे उस समय मान व उसके संघर्ष, महिलाओं की स्थिति और उनकी समस्याएं, नए और पुराने मूल्यों, सांप्रदायिक टक्कर, किशोरो के सुधार, ज़ात पात आदि।

जितने भी सुधारात्मक प्रयत्न इस युग में देखने को मिलते हैं किसी और युग में देखने को नहीं मिलते। जैसे राष्ट्रीय सुधार से संबंधित प्रयत्न, शैक्षिक और सांस्कृतिक स्तर पर सुधार के प्रयास, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक स्तर पर सुधार के प्रयास आदि। यह प्रयास एक आंदोलन के रूप में हमारे सामने आता हैं जैसे राजा राम मोहन राय (1774-1833) ने 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की। इसमें उन्होंने धार्मिक और सुधारात्मक दृष्टिकोण को अपने आंदोलन का विषय बनाया, रवींद्रनाथ टैगोर (1818-1905) ने राजा राम मोहन राय के आंदोलन को विस्तार व मजबूती दी, कशोरचन्दरसैन (1834-84) ने भी जनता और उससे जुड़े हुए समस्याओं पर काम किया। इसके अतिरिक्त राम कृष्ण, परम हंसी आदि ने अपने अपने आंदोलनो में जनता को जगह दी। इन विचारकों के कारण ही आज हम लोग स्वतंत्रता की खुली हवा में सांस ले

रहे हैं। अगर हम सार्वजनिक रूप से या राष्ट्रीय स्तर पर अपने आप को देखते हैं तो दूसरों से कही बेहतर पाते हैं, साहित्यिक दृष्टि से अन्य भाषाओं के साहित्य से अपने साहित्य की तुलना करें तो कुछ विषयों में हम उनसे कहीं आगे नजर आते हैं।

मुसलमानों के भारत में आगमन ने जहां यहां की संस्कृति को प्रभावित किया वहीं शैक्षिक, राजनीतिक, आर्थिक, आर्थिक स्तर पर अंग्रेजों के आने से लोगों में एक बड़ा परिवर्तन देखा गया, लोग जहां परंपरागत धार्मिक शिक्षा को ही महत्व देते थे वही एक नई भाषा और एक नया साहित्य धीरे धीरे लोगों के दिलों में घर करने लगा, खासकर युवा पीढ़ी, यह तो सरे से ही उसका समर्थक बन गयी। हिंदी और उर्दू भाषाओं की जगह अंग्रेजी भाषा को प्राथमिकता दी जाने लगी। ज़ाहिर है कि एक नई भाषा नए साहित्य को सामने लाता है। चूंकि उस समय का साहित्य जनता से जुड़ा हुआ था। जिसकी वजह से लोगों में एक नई सभ्यता, नई रोशनी और नई सोच व फ़िक्र का परिवर्तन देखा गया। जहाँ इसके के कुछ नकारात्मक पहलू लोगों के सामने आए वही कुछ सकारात्मक पहलू से भी अवगत हुए। इसको कुछ लोग इसे अपने धार्मिक विश्वासों में परिवर्तन मानते थे और सीखने और सिखाने पर आपत्ति करते थे। जब बुद्धिजीवी लोग इसकी उपयोगिता से लोगों को अवगत कराना चाहते थे तो ऐसे लोग तरह तरह का तर्क देकर मना कर देते थे वहीं कुछ बुद्धिमान इंसानों ने इस भाषा को बड़ी खुशी से स्वीकार किया क्योंकि वे जानते थे कि इसके महत्व क्या है। अंश:

> मित्रो देखो भारतवर्ष की कैसी दुर्दशा हो रही है यहाँ के मनुष्य कैसे आलसी, कायर, मूर्ख और हो गए हैं। ये दोनों मनुष्य, जो वृक्ष के नीचे बैठा थे कैसी बाते कर रहा थे। एक ने कहा-"भाई हमारे लड़के को बहुत लोग कहिन कि अग्रेजी पढाओ, पर हम नही पढावा'' दूसरे ने पुछा- काहे ? उसने उत्तर दिया - कि तु नाही जान्त्यो, देखो, राम चन्द्र अग्रेजी पढिन न,बेमजहब होथ गए। ऐसा सुना है कि अंग्रेज लोगों के साथ- साथ लेथै, और थाक पोथिन बनाइन है, बहिमा लिखिन है कि अंग्रेजन के साथ खाय मे कोइ हरज नाही।ई किरिखतानी माता नाही, तो और का है?। दुसरे ने कहा- न हम अग्रेजी पढा न हमारे पुर्खा लोग अंग्रेजी पढ़िन फिर जो ऊ पडिहै, तो का ओके हमहू लोगन से जादा अक्किल आय जेहे। इ सब बातन को सोच के हम ओके अग्रेजी -पारसी कुछ नही पढावा ,खाली अपना इल्म सिखाया दिया। दुसरे ने कहा- हा और का राम जी रक्खे चार दिन से सिखाने होय जैहै, तो अपना सब काम -काज तो लिकाल लेहिए, नाही तो पाच- छा: बरस अग्रेजी पढै, तबौ कोई काम का शहर न आवै [6]

वीं सदी के भारतीय समाज पूरी तरह से पुराने रीति-रिवाज व धार्मिक विश्वासों में 19 जकड़ा हुआ था इससे जहां समाज का वातावरण खराब हो रहा था वहीं लोगों के बीच आपस में असहमति भी थी।इसे खत्म करने के लिए सर सैय्यद अहमद खान, राजा राम मोहन राय आदि ने जहां व्याख्यानों का सहारा लिया वहीं हमारे साहित्य के उपन्यासकारों नजीर अहमद, रतन नाथ सेरशार, अबदोलहलीम शरर, मिर्जा हादी रुसवा, श्रद्धा राम फलवरी, किशोरी लाल गोस्वामी, राधा कृष्ण दास आदि ने अपनी पुस्तकों से समाज में फैली हुई बुराई को खत्म करने इस आंदोलन का असर यह हुआ कि अब लोगों के विचारों में बदलाव आने की प्रयास किए। लगा। पुराने रीति-रिवाजो में अब पहली वाली बात नहीं रह गई।

जैसा कि हम जानते हैं कि उर्दू और हिंदी दोनों भाषाओं के साहित्य के जन्म का अहद ही है। दोनों ने बचपन से लेकर जवानी तक का सफर एक साथ तय किया। हिंदी करीब एक उपन्यास में भी लगभग इन्हीं विषयों को पेश किया गया जो उर्दू उपन्यासकारों ने पेश किया है।अंतर केवल इतना है कि उर्दू उपन्यासकारों ने जिन विषयों को अपने उपन्यासों में जगह और ज्यादातर उपन्यासकार दी है वह इन विषयों को मुसलमानों के घरों से ढूंढ कर लाए हैं धार की बातें करते हैं वहीं हिंदी उपन्यासकार ने हिन्दुओं से जुड़ीस े क खासकर की इसी वर्ग परेशानी और उनके सुधार की बातें की हैं लेकिन यह प्रभाव हिंदी उपन्यासकारों के यहाँ अधिक अच्छे से दिखाई देता हैं।

SUMMARY

INDIAN SOCIETY IN 19TH CENTURY'S URDU-HINDI NOVELS

Mohammad RASHID*

Many articles and books have been written on the causes and consequences of the War of Independence in 1857, this is one of the most significant events of the history of Subcontinent. Both historians and fiction writers have drawn conclusions diverse perspectives from the war. But still many of its facets seem in the dark. The role of fiction writers during the War and after the war is one of those dimensions which still need further exploration and analysis by the researchers.

After the war Indians could not be able to understand how we come out from these situations. The British government tried to create so many problems for India and Indian society and Indian peoples were waiting for a magic. The conditions of the Indian were going to be worse day by day.

In this situation, some of the Hindi-Urdu fiction writers came out and took responsibility to give a hope for Indian peoples. Firstly they understand about the current situation and requirements, then they began to work. They were very intellectual and knew how to pull out Indian peoples from this terrible situation. For fulfilling their aims they started to work with literature because they knew this is a very easy way to enter their mind and make them understand without any difficulties. Here is the name of some Urdu-Hindi fiction writers and intellectuals those who did great job for India and Indian peoples Sir Syed Ahmad Khan, Shahwaliullah, Nazeer Ahamad, Ratannath Sharesar, Abdul Halim Sharar, Raja Mohan Ray, Shiridha Ram Fulauri, Radha Krishn, Balkirish Bath etc.

उद्धरण की सूची

1.तारीख रोज़नामचा, खलीक अहमद निज़ामी, स .3

2.जदोजौत आजादी , बिपिन चंद्रा, पी .23

3.शरीफ ज़ादा, मिर्जा हादी रुसवा, पी .14

4.शरीफ ज़ादा, मिर्जा हादी रुसवा, पी .90

5.इबनोलवकत, नजीर अहमद, पी .57

* Dr. Lecturer, Istanbul University, Faculty of Letters, Eastern Languages and Literatures Department, Urdu Language and Literature (rashujnu@gmail.com).